Mob No 9934683027
Date 27.07.2020
Dr Tapati Mukherjee
Associate Prof.
Dept. of Music
H.O.D
R.M. College Sars.

Study Material For B.A Part III (Hons)
Paper 5th Theory.
Topic Gharana (घराना).

शास्त्रीय संगीत का और एक प्रकार गायन शैली ध्रुपद-धमार है। मध्यकालीन प्रबन्ध गायन शैली का संशोधित रूप ध्रुपद धमार है, जो शास्त्रीय संगीत के दृष्टि से सर्व प्राचीन और संगीत के सुर लय ताल और शब्द के दृष्टि से एक आदर्श शैली माना गया है। अतः इस गायन शैली का भी अनेक घराना की विकास हुई जैसे– हवेली संगीत की परम्परा, डगुर या डागुर घराना, ध्रुवपद का दारभंगा घराना, बिहार में बेतिया घराना अलवर घराना आदि। यद्यपि अकबर के दरबार में तानसेन के "सेनिया घराना" में ध्रुपद गायन शैली अपने पूर्ण रूप से विकसित एवं प्रचलित रही। किन्तु मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात् पं० तानसेन से जुड़े हुए सेनिया तथा उनसे जुड़े हुए घराने का कलाकारों को राजाश्रय समाप्त हो गया और अच्छे-अच्छे कलाकारों ने अपनी रोजी रोटी के लिए रजवाड़ों और देशी रियासतों में आश्रय लिया और विभिन्न घराने की उत्पत्ति हुई।

कहा जाता है कि यद्यपि राजा अकबर के दरबार में ध्रुवपद की घराना का उत्पत्ति हुई लेकिन उसके पूर्व में ही हमारे उत्तर भारत के मंदिरों में गाये जाने वाली भक्ति पदों एवं कीर्तनों में ध्रुवपद की उद्भव हो चुका था।

ध्रुवपद का डागुर घराना

ध्रुवपद का सुप्रसिद्ध डागुर घराना का है कि श्री० अलवर और जयपुर जी को माना जाता है। यह घराना पूरे विश्व में ध्रुपद गायन के लिए प्रसिद्ध है। इसे "डागर बन्धुओं" से भी जाना जाता है। क्योंकि इस घराना के गायक जोड़ियों के साथ गायन में बैठते हैं। सर्व प्रथम बाबा एवं उनके मित्र अल्लाबन्दे और जाकिरुद्दिन की जुगलबन्दी डागुर बन्धुओं के रूप में प्रसिद्ध हुई।

डागुर घराने का स्वरूप एवं विशेषताएं —

Next Not Continued.